RAJUVAS NEWSLETTER

July - September, 2015
Volume | VI
Issue | III

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

A publication of
Rajasthan University of Veterinary & Animal Sciences, Bikaner
Website: www.rajuvas.org

प्रथम दीक्षान्त समारोह विशेषांक

कुलपति की कलम से

हम सौभाग्यशाली हैं कि माननीय राज्यपाल एवं राजुवास के कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह जी ने 15 से 17 सितम्बर, 2015 तक अपने तीन दिवसीय बीकानेर प्रवास में राजुवास के विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत कर हमें आशीर्वाद दिया। अपने प्रवास के पहले दिन 15 सितम्बर 2015 को माननीय राज्यपाल ने राजुवास के पहले तकनीकी म्युजियम का लोकार्पण किया और ई–शासन के एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन केन्द्र का उद्घाटन व छात्राओं के लिए नए छात्रावास की नई विंग की आधारशिला रखी। माननीय कुलाधिपति ने इन कार्यक्रमों के अंत में पत्रकारों से रूब–रू होते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा अपनी स्थापना के अल्पकाल में अर्जित उपलब्धियों की सराहना करते हुए विश्वविद्यालय की हौसला–अफजाई की। इस अवसर पर उनके प्रकट किए गए उद्गारों का उल्लेख करना चाहूँगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने कम समय में उच्च शिक्षा को आधुनिक तकनीक से चलाने के कदम उठाए हैं। मैं, राजुवास के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत के कामकाज से बहुत प्रसन्न हूँ जिन्होंने अभूतपूर्व कार्य कर दिखाया है। एक वाक्य में कहूँ तो इन्होंने "जंगल में मंगल" वाक्य को चरितार्थ किया है। इन अथक प्रयासों से यह विश्वविद्यालय पशुपालन और कृषि के क्षेत्र में एक अग्रणी विश्वविद्यालय बनेगा। माननीय राज्यपाल ने कहा कि उनका प्रयास है कि राज्य में विश्वविद्यालय की परीक्षाएं नकल मुक्त हो जाए। शिक्षक और विद्यार्थी समय से कक्षाओं में पहुँचे। उन्होंने कहा कि छात्रों को समय से उपाधियां मिले क्योंकि यह उनकी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। माननीय राज्यपाल और कुलाधिपति द्वारा व्यक्त इन विचारों से पूरे विश्वविद्यालय कुल की वचनबद्धता और कार्य के प्रति समर्पण की भावना मजबूत हुई है। इससे हमारा मनोबल बढ़ा है। हम विश्वास दिलाते हैं कि यह विश्वविद्यालय पूरे मनोयोग, मेहनत और निष्ठा से पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की बेहतरी के लिए कार्य करते हुए पशु जगत और पशुपालकों के हित के लिए सदैव सचेष्ट रहेगा।

(A. K. Gahlot)

विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह का आयोजन

1127 उपाधियां व 57 छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदकों से नवाजा गया

माननीय राज्यपाल एवं राजुवास के कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने 16 सितम्बर को राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान की 1127 उपाधियां प्रदान कर 57 छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदकों से नवाजा। 917 स्नातक, 199 स्नातकोत्तर और 11 विद्यार्थियों को विद्या–वाचस्पति की उपाधियां प्रदान की गई। विश्वविद्यालय परिसर में सेना बैंड की स्वरलहरियों के बीच दीक्षांत शोभा यात्रा के पंडाल में प्रवेश के बाद कुलाधिपति की अनुमति से दीक्षांत समारोह शुरू हुआ। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करते हुए माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति ने अपने सम्बोधन में कहा कि दीक्षांत एक ऐतिहासिक अवसर होता है जिसके पीछे विश्वविद्यालय का सपना, प्रतिबद्धता, नवाचार के साथ शिक्षकों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत होती है। डिग्रियां प्राप्त करने वाले विद्यार्थी राज्य के साथ ही राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण मानव संसाधन हैं। भारत एक ऋषि और कृषि प्रधान देश है। कृषि और पशुपालन का गहरा संबंध है जो किसान की जिंदगी और मौत से जुड़ा है। राज्य के लगभग 70 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों की आय का साधन पशुपालन है अतः पशुचिकित्सक सेवा भाव को लेकर अपने कार्य क्षेत्र में जाएं और पशुपालकों के लिए कार्य करें। यह विश्वविद्यालय पशुपालन के क्षेत्र में विकास के लिए अनुसंधान और प्रसार का कार्य तीव्र गति से कर रहा है। उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय के ई–मॉडल के लिए सभी को बधाई देते हुए कहा कि यह एक आदर्श प्रयास है जिसे राज्य के सभी विश्वविद्यालयों को लागू करना चाहिए। माननीय राज्यपाल ने कहा कि कृषक देश का उत्पादक और बड़ा उपभोक्ता भी है अतः कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार जरूरी है। अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, अनावृष्टि, ओला–पाला और खेतिहर रोगों से कृषक को बचाने के लिए उसकी फसलों और पशुओं का बीमा करवाया जाना चाहिए। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि राजुवास अपनी स्थापना के अल्पकाल में शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में पशुचिकित्सा में आधुनिक तकनीक और कार्यप्रणाली का समावेश करके आगे बढ़ रहा है। मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) डॉ. एन.एस. राठौड़ ने अपने दीक्षांत भाषण में कहा कि पशुचिकित्सा क्षेत्र में कार्य करने की विपुल संभावनाएं मौजूद हैं। विश्वविद्यालय से निकलने वाले छात्र के जीवन में 4–टी ट्रेडिशन (परंपराओं से), टेक्नोलॉजी (तकनीक), टेलेन्ट (हुनर) और ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) का विशेष महत्व है। अब आपको अंतिम टी तक पहुँचकर पशुपालकों और कृषकों की सेवा करनी है। डॉ. राठौड़ ने कहा कि देश के 73 राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में अपने कार्यों और दूरदर्शिता से आगे बढ़ते हुए राजुवास ने अग्रणी स्थान बनाया है। दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय पशुचिकित्सा परिषद्, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा ने नव दीक्षित पशुचिकित्सा छात्रों का आह्वान किया कि समाज के पिछड़े